|  |  |  |  |  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |
| ميلادي | هجري | اليوم | الامساك | صلاةالفجر | شروق الشمس | الظهر | صلاة المغرب |
| م | **هـ** | **Day** | **imsak** | **Fajr** | **Sunrise** | **Dhuhr** | **Maghrib** |
| 1Apr | **21رمضان** | **الاثنين** | **04:24** | 04:34 | 06:33 | 13:07 | 20:05 |
| 2 | **22** | **الثلاثاء** | **04:21** | 04:31 | 06:30 | 13:06 | 20:07 |
| 3 | **23** | **الأربعاء** | **04:18** | 04:28 | 06:27 | 13:06 | 20:09 |
| 4 | **24** | **الخميس** | **04:14** | 04:24 | 06:25 | 13:06 | 20:11 |
| 5 | **25** | **الجمعة** | **04:11** | 04:21 | 06:22 | 13:05 | 20:13 |
| 6 | **26** | **السبت** | **04:08** | 04:18 | 06:20 | 13:05 | 20:16 |
| 7 | **27** | **الأحد** | **04:04** | 04:14 | 06:17 | 13:05 | 20:18 |
| 8 | **28** | **الاثنين** | **04:01** | 04:11 | 06:14 | 13:05 | 20:20 |
| 9 | **29** | **الثلاثاء** | **03:57** | 04:07 | 06:12 | 13:04 | 20:22 |
| 10 | **1 شوال** | **الأربعاء** | **03:54** | 04:04 | 06:09 | 13:04 | 20:24 |
| 11 | **2** | **الخميس** | **\*** | 04:00 | 06:07 | 13:04 | 20:26 |
| 12 | **3** | **الجمعة** | **\*** | 03:56 | 06:04 | 13:04 | 20:28 |
| 13 | **4** | **السبت** | **\*** | 03:53 | 06:02 | 13:03 | 20:31 |
| 14 | **5** | **الأحد** | **\*** | 03:49 | 05:59 | 13:03 | 20:33 |
| 15 | **6** | **الاثنين** | **\*** | 03:45 | 05:56 | 13:03 | 20:35 |
| 16 | **7** | **الثلاثاء** | **\*** | 03:41 | 05:54 | 13:03 | 20:37 |
| 17 | **8** | **الأربعاء** | **\*** | 03:37 | 05:51 | 13:02 | 20:39 |
| 18 | **9** | **الخميس** | **\*** | 03:34 | 05:49 | 13:02 | 20:41 |
| 19 | **10** | **الجمعة** | **\*** | 03:30 | 05:46 | 13:02 | 20:44 |
| 20 | **11** | **السبت** | **\*** | 03:26 | 05:44 | 13:02 | 20:46 |
| 21 | **12** | **الأحد** | **\*** | 03:22 | 05:42 | 13:02 | 20:48 |
| 22 | **13** | **الاثنين** | **\*** | 03:17 | 05:39 | 13:01 | 20:50 |
| 23 | **14** | **الثلاثاء** | **\*** | 03:13 | 05:37 | 13:01 | 20:52 |
| 24 | **15** | **الأربعاء** | **\*** | 03:09 | 05:34 | 13:01 | 20:54 |
| 25 | **16** | **الخميس** | **\*** | 03:04 | 05:32 | 13:01 | 20:57 |
| 26 | **17** | **الجمعة** | **\*** | 03:00 | 05:30 | 13:01 | 20:59 |
| 27 | **18** | **السبت** | **\*** | 02:55 | 05:27 | 13:00 | 21:01 |
| 28 | **19** | **الأحد** | **\*** | 02:51 | 05:25 | 13:00 | 21:03 |
| 29 | **20** | **الاثنين** | **\*** | 02:46 | 05:23 | 13:00 | 21:05 |
| 30 | **21** | **الثلاثاء** | **\*** | 02:41 | 05:20 | 13:00 | 21:08 |

##

 **امساكية ومواقيت الصلاة لشهر رمضان المبارك 1445/ نيسان 2024 لمدينة كرستيان ستاد**

**** Vattentornsvägen 9, 291 32 Kristianstad

**جمعية الوحدة الاسلامية**

**مناسبات مناسبات شهر شوال:**

1 شوال عيد الفطر السعيد

8 شوال هدم قبور أئمّة البقيع ( ع )

25 شوال شهادة الإمام الصادق ( ع )

**معرفة السعادة**

إن المفهوم الإسلامي الصحيح للسعادة، هو الوصول إلى رضوان الله تعالى، بتحقيق هدف الخلقة والوجود، ألا وهو العبودية الحقة لله تعالى، حيث يقول تعالى: {وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ}؛ وليست هي في الآمال المتفرقة، المشتتة للذهن، والباعثة على الحسرة..

**الرضوان الاكبر**

إن الرضوخ لأحكام العشق المفروضة على عاتق العاشق، تجعل كل منا ينال ويحوز رضا المولى عز وجل، بالتعرض للتوفيقات الإلهية المتكررة، محققاً غايته المنشودة في سبيل رضاه -تبارك وتعالى- حينما قال: {فَلاَ وَرَبِّكَ لاَ يُؤْمِنُونَ حَتَّىَ يُحَكِّمُوكَ فِيمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لاَ يَجِدُواْ فِي أَنفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُواْ تَسْلِيمًا}.

**تذكر**

إذا أراد الإنسان أن يرسم لنفسه طريقاً في الحياة، فلينظر إلى رضا الله عز وجل.. وهذا يحتاج إلى نور من الله عز وجل، لذا على الإنسان أن يطلب هذا النور من الله -عز وجل-.. هذا النور الذي لو أوقعه الله في قلب وفي وجود الإنسان، فإنه يخرج من الحيرة، وتتحول حياته إلى جنة من جنان الله في الأرض.

www.alwhda.se

لقد سعى علي (ع) في إعطاء معنى أوسع وأشمل للعبودية، بدءاً من الحالات العرفانية في المحراب، الى الحالات الإنسانية في الحروب.. فلم يرض علي (ع) بتقسيم الحياة إلى ما لله -تعالى- ولغيره.. فالحياة كلها عنده مصداق لقوله تعالى: {إِنَّ صَلاتِي وَنُسُكِي وَمَحْيَايَ وَمَمَاتِي لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ}.. فلنتصور

 لون الحياة على الأرض، عندما تكون كل حركة للأفراد والحضارات، قائمة على أساس مرضاة الله -تعالى- في كل صغيرة وكبيرة.. أوَ هل من الغريب

 أن يكون سلوك المملوك على وفق مراد المالك؟.. أم أن ذلك مقتضى طبيعة الخالقية والمخلوقية!..

* إن الشباب هو سن اشتعال الشهوات والميل إلى الخطايا، ولكن الشاب الذي يأتي إلى مجالس الذكر؛ فإنه يجاهد نفسه، ويقدم ذكر الله على ذكر الشيطان.. فرب العالمين يباهي الملائكة بهؤلاء الشباب.
* إن الشباب هو مرحلة: القوة، والفتوة، والنشاط، والاختيار، والعزم.. فالشاب عندما يصمم على عمل تجاري ثقافي؛ فإنه يفلح بشكل فائق؛ لأنه قمة في النشاط.. لكن -مع الأسف- هذا النشاط، وهذه القوة -في كثير من الأحيان- يُصبُّ في مصب غير مرغوب لله سبحانه وتعالى!.